मद - मदात्यय

- मद्यपान के सामांय प्रभाव को 'मद' कहा जाता है।
- मद्य या सुरा का विधी विपरीत सेवन करने से उग्र स्वरूप का कष्टकारी 'मदात्यय' रोग उत्पन्न होता है।
- तमोगुण प्रधान होने से जो द्रव्य बुद्धि का नाश करके मद या मदात्यय उत्पन्न करते हैं वे मद्य - मदकारी या मादक द्रव्य कहलाते हैं।

"बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारि तदुच्यते ।
तमोगुणप्रधानं च यथामद्यसुराऽऽदिकम् ॥" (शा. स. पू. ख. 4/22)

मद्य मे लघु, उष्ण, तीक्ष्ण, अम्ल, सूक्ष्म, रुक्ष, विशद, व्यवायी, विकाशी, आशुकारी ये दश गुण होते हैं जो कि ओज के गुणों के विपरीत होते हैं अतः ओजक्षय ही मदात्यय का प्रधान हेतु है।

विभिन्न आचार्यों ने मद्यपान का वर्णन सामांय क्रिया के रूप मे किया है यथा आचार्य च. - वात प्रकृति के पुरुषों के लिए गुड़ एवं चावल से बनी, पित्त प्रकृति वालों के लिए मुनक्का से बनी तथा कफ प्रकृति वालों के लिए मधु से बनी मदिरा पान करने को कहा है।

आचार्य सु. ने शल्यकर्म से पूर्व तथा अधिक ~~पीड़ा~~ पीड़ा होने पर पश्चात भी मदिरापान को कहा है।

योगरत्नाकर ने मद्य की प्रशस्त मात्रा बतायी है - सुबह - 2 पल
मध्याह्न - 4 पल
शाम - 8 पल

निदान - सामांय निदान - ① शारीरिक निदान
(I) आहारज निदान
(II) विहारज निदान
② मानसिक निदान

- विशिष्ट निदान - दोषानुसार

सम्प्राप्ति -
अविधिपूर्वक व निदानों के साथ मात्राधिक्य मद्यपान, ओज के दश गुणों का क्रमशः नाश, चेतनास्थान स्थित मनः क्षोभण जिससे मद उत्पत्ति होती है।
स्रोतोवरोध होकर भी मन का क्षोभण एवं मद की उत्पत्ति होती है।

Scanned with CamScanner

सम्प्राप्ति घटक

दोष - त्रिदोष (कफ → पित्त → वायु)
दूष्य - रस, रक्त, संज्ञा (बुद्धि)
स्रोतस - रसवह, रक्तवह, संज्ञावाही स्रोतस
स्रोतोदुष्टि - संग
अधिष्ठान - हृदय (चेतना)
अग्नि - तीक्ष्णाग्नि
साध्यासाध्यता - कष्ट साध्य

भेद → (i) मद → (च०) प्रथम, द्वितीय, (मदान्तर), तृतीय & V, P, K, Δ
(सु०) → प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ

(2) मदात्यय → (i) पानात्यय (Acute Alcoholism)
(ii) परमद (Immediate after effect of Alcoholism)
(iii) पानाजीर्ण (Indigestion of Alcohal)
(iv) पानविभ्रम (Chronic Alcoholism)
(v) मद्यत्याग के पश्चात सहसा मद्यपान जनित रोग
- ध्वंसक
- विक्षय

लक्षण → (मद) <
सामान्य
विशिष्ट (भेदानुसार) <
- प्रथम (Stimulati)
- द्वितीय (Excitment)
- तृतीय (Delirium)
- चतुर्थ (Coma)

→ मदात्यय → V, P, K, Δ

चि॰ सूत्र -

1) सभी मदात्यय त्रिदोषज होते हैं, अतः जिस दोष के लक्षण आधिक हो उसी की चि. पहले करनी चाहिए।

② त्रिदोष साम्यावस्था में, "कफस्थानानुपूर्व्या च क्रिया कार्या मदात्यये।
पित्त मारुत पर्यन्तः प्रायेण हि मदात्ययः ॥
(च॰ चि॰ २४/108)

③ आम मद्य दोष के जीर्ण हो जाने पर - 'हेतु विपरीतार्थकारी चि॰'

④ तीक्ष्ण, उष्ण, अम्ल, विदाहकारक मद्य पान से उपद्रव शांति के लिए 'मद्यपान'

⑤ संशोधन, संशमन, लंघन, परिश्रम हितकर ·

चिकित्सा क्रम

① शोधन चि॰ ← वमन, विरेचन, वस्ति कर्म

② शमन चि॰

① रस / भ॰ - 125-250mg मधु, शर्करा, घृत

- बृ. वात चिंतामणि रस, कज्जली रस, राजावर्त रस, उन्माद गजांकुश, मुक्ता पि. स्वर्ण माक्षिक भ॰

② वटी / मोदक 250 - 500 mg मक्खन, मधु

महाकल्याण वटी, अर्क वटी, सौवर्चल पाक वटी, एलाद्य मोदक

③ चूर्ण - 2-6 gm जल, मद्य

त्रिकटु चूर्ण, अष्टांग लवण, चव्यादि चूर्ण, सर्पगंधा चूर्ण, फलात्रिकाद्य चूर्ण

④ आसव / अरिष्ट 20 - 40 ml जल

श्री खण्डासव, द्राक्षारिष्ट, खण्डासव

⑥ घृत - 10-20 ml. दुग्ध

कल्याणक घृत, पुनर्नवाद्य घृत

Scanned with CamScanner

पाक / अवलेह - 10 - 20gm दुग्ध, जल

कूष्माण्डावलेह, आटरुषकावलेह, अमृत भल्लातक

आदर्श चि० पत्र

① निदान परिवर्जन
② संशोधन
③ संशमन
- स्वर्णमाक्षिक भ० - 65mg
मुक्ता पि० - 65mg
त्रिकटु चूर्ण - 1gm
अश्वगंधा चूर्ण - 2gm
1x3. मधु से

- आटरुषक लवण - 2gm
1x2

- द्राक्षारिष्ट - 20ml BD

④ सत्वावजय, तनावहर, आश्वासन चि०
⑤ योगाभ्यास / प्राणायाम
⑥ पथ्य पालन

पथ्य - आहार - यव, शाली, मूंग, उड़द, गोधूम, वेशवार, शीता मद्य, परोल, फालसा, द्राक्षा, खर्जूर, दाडिम, नारियल, दुग्ध पुराना घृत, अचार, बथुआ, परवल, लौका, तोरई, चंदन
विहार - लंघन, ठंडी वायु, धारागृह, शीतल किरणे, मित्रमण्डली गीत, संगीत, स्नान आदि

अपथ्य - आहार - ताम्बूल सेवन
विहार - स्वेदन, अंजन, नस्य धूम्रपान, पदघात आदि

Scanned with CamScanner